International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 13-02-2023, Accepted: 03-03-2023, Published: 18-03-2023
Volume 9, Issue 2, 2023, Page No. 25-27

अहोम साम्राज्य की सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक व्यवस्था का विश्लेषण

मनोहर दान
शोध छात्र, इतिहास विभाग, मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
भारत में अनेक राजवंशो का शासन रहा। केंद्रीय स्तर के साथ साथ भारत के क्षेत्रीय स्तर पर भी विशिष्ट राजवंश रहे है। इतिहास के अध्ययन के केंद्रीय दृष्टिकोण के कारण प्राचीन भारत में पाटलिपुत्र आधारित साम्राज्यों और मध्यकालीन भारत में दिल्ली आधारित साम्राज्यों का मुख्य अध्ययन किया गया। भारतीय इतिहास में क्षेत्रीय साम्राज्यों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है, उनके अध्ययन के बिना भारत के इतिहास की पूर्ण व्याख्या नहीं हो पाती है। मध्यकालीन भारतीय इतिहास में पूर्वोत्तर भारत में अहोम साम्राज्य के उदय और सुदृढ़ीकरण का अध्ययन, तत्कालीन भारत की सामाजिक स्थिति, सांस्कृतिक गौरव, आर्थिक और प्रशासनिक व्यवस्था की नवीन जानकारी प्रदान करता है।
अहोम राज्य के निर्माण में बोरफुकन प्रणाली,पाइक बेगारी प्रथा, गुरिल्ला युद्ध नीति, नम चावल उगाने की पद्धति, नए स्थलों की स्थापना और जनसंख्या का स्थानांतरण महत्वपूर्ण कारक रहे थे। 18वीं सदी के अंतिम दशकों और 19वीं सदी के आरंभिक दशकों में अहोम राज्य में आंतरिक अशांति उत्पन्न होने लगी साथ ही स्थानीय आदिवासी समुदाय का विरोध होने लगा और बर्मा के लगातार आक्रमण के कारण अहोम राज्य का अवसान होने लगा।

मूल शब्दः अहोम साम्राज्य, मध्यकालीन भारतीय इतिहास, तत्कालीन भारत की सामाजिक स्थिति

आलेख परिचय
भारत के पूर्वोत्तर भाग में 13वीं शताब्दी में अहोम साम्राज्य की स्थापना हुई थी। अहोम राज्य ने 1228 ईस्वी से 1226 ईस्वी तक लगभग 600 सालों तक भारत में शासन किया। इस शोध पत्र में अहोम राज्य के प्रशासनिक व्यवस्था, आर्थिक संरचना और राजनीतिक पहलुओं का विस्तृत अध्ययन किया गया है और साथ ही साथ समकालीन राज्यों की राजव्यवस्था के साथ तुलनात्मक विवेचना की गई हैं। अहोम साम्राज्य के प्रथम शासक छो लुंग सुकफ़ा के द्वारा जनजातियों को साथ लेकर संगठित राज्य निर्माण की रूपरेखा को शोध पत्र में शामिल किया गया है। इसके अतिरिक्त अहोम राज्य के स्वरूप, सैन्य परिदृश्य और बारफुकन नामक प्रसाशनिक तंत्र को भी शामिल किया गया है। मुगलों के साथ संबंध और सराईघाट युद्ध की रणनीति को भी इस शोध पत्र में शामिल किया गया है।

अहोम साम्राज्य की स्थापना और सुदृढ़ीकरण
तेरहवीं शताब्दी के द्वितीय दशक में आज के उत्तरी म्यांमार के पहाड़ियों से शान या ताइ वंश के एक समूह का आगमन छो लुंग सुकफा के नेतृत्व में, भारत के उत्तरी असम में हुआ था। ये समूह 9000 लोगों के साथ आया जिसने पटकाई बूम की पहाड़ियों को पार करके ब्रह्मपुत्र की घाटी में प्रवेश किया और 1228 ईस्वी में अहोम साम्राज्य की नींव रखी। राजा छो लुंग सुकफ़ा साहसी और नवाचारी था, नागाओं को पार करके यहाँ पहुंचा था,जिससे उसके वीरता के गुणों का प्रचार होने लगा। स्थानीय जनजातियों से वैवाहिक रणनीति के तहत विवाह करके अपने राज्य का सुदृढ़ीकरण किया। सुकफा ने 1268 ईस्वी तक राज्य किया। (चंद्रा, 2009)
अहोम साम्राज्य ने लगभग 600 साल तक असम के क्षेत्र पर शासन किया जो कि विश्व के लंबे काल तक शासन करने वाले साम्राज्य में से एक है। अहोम की आरम्भ में चराइदेव राजधानी थी जो कि गुवाहाटी के पूर्व में थी। बाद में, अहोम राजवंश ने असम के लखीमपुर, शिवसागर, दारांग, नवगाँव और कामरूप क्षेत्र में अपना विस्तार किया।अहोम साम्राज्य के द्वारा असम की जनजातियों को समायोजित करके एक समावेशी शासन की स्थापना की जो भारतीय इतिहास को नये परिप्रेक्ष्य में समझने की प्रेरणा देती है।अहोम शासकों ने यहाँ की संस्कृति और समाज को आत्मसात करते हुए अपने को मजबूत किया और 17 वीं शताब्दी में पूर्वोत्तर भारत का प्रमुख राजवंश बना जिसने मुग़लों भी पराजित कर दिया (बारपुजारी, 2004)
अपनी पश्चिमोत्तर सीमा को मजबूत किया और ब्रह्मपुत्र घाटी में एक नवीन और शक्तिशाली साम्राज्य का निर्माण किया।अहोम राजवंश का अध्ययन,औपनिवेशिक इतिहास लेखन की धारा के विपरीत भारतीय इतिहास के अनछुए पहलुओं को सामने लाकर नवीन दृष्टिकोण के साथ भारतीय इतिहास को समृद्ध किया जा सकता है।

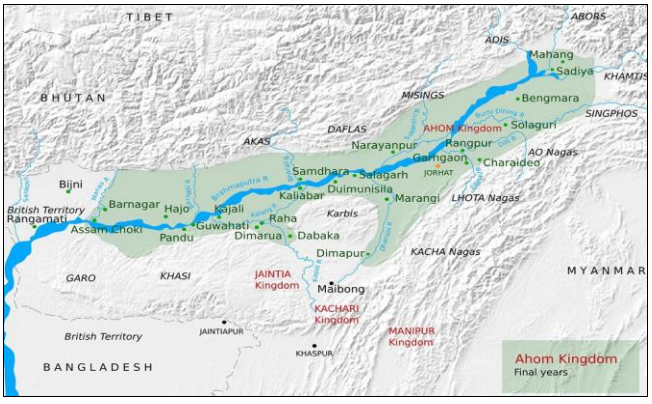

चित्र 1: स्त्रोतः संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार।

अहोम राजवंश की राजनीतिक और प्रशासनिक व्यवस्था
असम के बुरुंजी इतिहास और स्थानीय लेखन स्रोतों से अहोम साम्राज्य के सामाजिक आर्थिक और प्रशासनिक व्यवस्था का विवरण मिलता है।अहोम राजवंश में प्रसासनिक कार्यों का लेखा जोखा रखा जाता था इसलिए ये बुरुंजी इतिहास का महत्वपूर्ण स्रोत साबित हुए है।भारत के अन्य साम्राज्यों की तरह ही अहोम

साम्राज्य में राजा की स्थिति महत्वपूर्ण थी। राजा को ईश्वर का अवतार माना जाता था। राजा स्वर्गदेव जैसी उपाधियां धारण करता था, जिससे यह पता चलता है कि अहोम राजा भी भारत के अन्य राजाओं की तरह ही दैवीय उपाधियां लेकर, अपनी स्वीकृति को मजबूत करते थे। (बारपुजारी, 2004)

राजा के लिए परामर्श और कार्य सहायता हेतु मंत्रिपरिषद भी विधमान थी जिसे पात्र मंत्री कहते थे।

अहोम राजवंश में अधिकारी तंत्र की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी,जिसे कौटिल्य के सप्तांग सिद्धांत में भी महत्वपूर्ण माना है।ये अधिकारी प्रशासन के कार्यों को संपादित करके साम्राज्य को स्थायित्व प्रदान करते थे। इस अधिकारी तंत्र में बोरफुकन अधिकारी महत्वपूर्ण होता था। इसे सैन्य और प्रशासन जैसी महत्वपूर्ण असैन्य जिम्मेदारियां दी जाती थी। 17 वीं शताब्दी मेंएक लचित बोरफुकन महत्वपूर्ण बोरफुकन हुए जिन्होंने अहोम सेना का नेतृत्व करते हुए,मुगल सेना पराजित किया जिससे अहोम साम्राज्य को ख्याति प्राप्त हुई और असमिया संस्कृति का विस्तार व्यापक हुआ। एक अन्य बोरबरुआ अधिकारी होता था जिन्हें सैन्य और न्यायिक दायित्व प्रदान किए जाते थे।अहोम साम्राज्य के द्वारा स्थानीय भुइयां जैसी ज़मीदारी प्रणाली को समाप्त करते हुए जबरन श्रम की प्रणाली को विकसित किया (बरुआ, 2002)।

अहोम राजवंश का सैन्यस्वरूप

मध्यकालीन भारत में सेना की शक्ति और सैन्य रणनीतियों पर साम्राज्य का भविष्य और स्थायित्व निर्भर रहता था। जब भारत के केंद्र दिल्ली में सल्तनत और मुग़ल साम्राज्य जैसे शक्तिशाली साम्राज्य का शासन चल रहा था,उस दौर के परिधीय राजवंशो में अहोम साम्राज्य का शक्तिशाली बने रहना एक अध्ययन का विषय है। अहोम साम्राज्य की सेना एक व्यापक सेना थी। इसमें पैदल सेना व नौसेना,हाथी और घुड़सवार सेना भी होती थी।असम में पहाड़ियों की स्थिति के कारण यहाँ गुरिल्ला युद्धनीति विकसित रूप में थी,जिसने मुग़ल सेना को पराजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यही पद्धति राजस्थान के मेवाड़ राजवंश और दक्कन के मराठों ने मुग़लों के विरुद्ध अपनाकर मुग़लों को चुनौती दी थी। अहोम क्षेत्र में नदियों की व्यापक स्थिति थी जिसमें ब्रह्मपुत्र नदी महत्वपूर्ण थी इसलिए यहां के शासकों ने नौसेना का विकास किया जिसने 1671 ईस्वी के सराईघाट के युद्ध में मुग़लों को पराजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

अहोम राज्य की पाइक प्रणाली का भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। पाइक प्रणाली उपयोग सैन्य मजबूती के लिए किया जाता था,इसके तहत युवाओं को सेना में भर्ती किया जाता था जिन्हें सेवा के बदले भूमि दी जाती थी। अहोम साम्राज्य में तोपखाने भी उन्नत किस्म थे 1660 के दशक में बारूद और आग्नेय अस्त्र निर्मित होने लगे थे। में वहीं गुप्तचर की सार्थक प्रणाली सैन्य रूप से अहोम साम्राज्य को सैन्य रूप से शक्तिशाली बनाते थे (चंद्रा, 2009)।

अहोम राज्य का आर्थिक परिदृश्य

अहोम राजवंश में उपरी असम की दलदली भूमि में नम चावल की खेती का प्रचालन आरंभ किया जिससे यहाँ पर कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी हुई। आदिवासियों की प्रणालियों से सीखते हुए बांस को आर्थिक रूप से उपयोगी बनाया जिसका विभिन्न निर्माण कार्य, नाव निर्माण सहित कार्य किये जाने लगे। पाइक प्रणाली जैसी बलपूर्वक बेगार जैसी प्रणाली विद्यमान थी जो कि असम साम्राज्य में उत्पादन व अन्य कार्यों में योगदान देते थे। राजा के द्वारा मंदिरों और ब्राह्मणों को भूमि अनुदान दिया जाता था।युद्ध के काल में अधिकांश पुरुष राज्य की ओर से युद्ध में सेवा देते थे,शांति काल में राज्य की आर्थिक विकास के कार्य करते थे। इसमें बांध और सिंचाई जैसे कार्य महत्वपूर्ण थे।अहोम शासकों ने सुबनसिरी नदी के तट से सोना निकालने वाले सोनोवाल कछारी समुदाय को अपने संरक्षण में ले लिया, जिसके बदले उनके राज्यों को ढेर सारा सोना मिलने लगा (बरुआ, 2002)।

अहोम राज्य की सांस्कृतिक स्थिति

अहोम साम्राज्य ने समाज को कहीं कुलों या खेलों में विभक्त किया।इस खेल में कहीं गांव आते है। अहोम शासक अपनी ताइ प्रणाली को त्याग कर धीरे धीरे हिन्दू धर्म के प्रतीक को अपनाने लगे थे। यहाँ भी वर्ण व्यवस्था के तत्व दृष्टिगोचर होते हैं। अहोम राज्य में जनगणना जैसे कार्य किए जाते थे। इसका उपयोग जनसंख्या के वितरण में प्रयोग लेते थे, सघन आबादी के लोगों को विरल आबादी या नए इलाकों में भेज दिया जाता था। इससे अहोम कुल टूटने लगे और अहोम प्रशासन केंद्रीकृत स्वरूप लेने लगा था। अहोम शुरुआती सदियों में जनजातियों धार्मिक प्रणाली अपनाए रखा और आदिवासी देवताओं को पूजते थे।

सुदांगफा (1397–1407) के काल में हिंदू धर्म का प्रभाव बढ़ने लगा और सिब सिंह (1714–44) के काल हिंदू धर्म प्रधान धर्म बन गया। हालांकि अभी भी आदिवासी तत्वों की उपस्थिति बनी हुई थी। अहोम राजवंश के चराइदेव मोइदाम या शाही कब्रगाह में राजाओं को दफनाने के साथ दैनिक उपयोग की वस्तुओं को दफनाया जाता था जिससे से पता चलता है कि ये परजीवन में विश्वास रखते थे। 18 वी सदी में कहीं अहोम लोगों ने बौद्ध धर्म और हिंदू धर्म अपना लिया था। अहोम राज्य में शैव, शाक्त, वैष्णव,बौद्ध सभी मत प्रचलित थे। नव वैष्णववाद के प्रवर्तक शंकरदेव को भी चुकाफा ने अपने राज्य में प्रश्रय दिया।

अहोम राज्य में कवियों और विद्वानों का सम्मान किया जाता था उन्हें भूमि अनुदान के रूप में दी जाती थी। यहाँ नाट्य कला उन्नत रूप में थी। संस्कृत भाषा रुचि दिखाई देती है और संस्कृ त की महत्वपूर्ण पुस्तकों का स्थानीय भाषा में अनुवाद हुआ। बुरंजी जैसे ऐतिहासिक ग्रँथ आरम्भ में अहोम भाषा में लिखे जाते थे बाद में असमिया भाषा में भी लिखे जाने लगे।

स्थापत्यकला में चराइदेव मैदाम प्रमुख है जो कि अहोम राजवंश के शाही कब्रगाह है। यह असम के पिरामिड जैसे प्रतीत होते है। इनकी जानकारी चांगरूंग फुकन ग्रँथ में मिलती है। ये निर्माण कार्य बाढ़ जैसी आपदाओं के प्रति प्रतिरोधी होते थे। इसके साथ ही शिवसागर के तलातल घर भी वास्तुकला के नायाब उदाहरण है। राजा गदाधर सिंह (1681–1696) के काल में स्थापत्य कला सर्वोच्चता पर पहुंची,जिसमे उमानंद मंदिर प्रमुख था। असम में आरंभ में निर्माण लकड़ी के होते थे बाद में कुछ ईंट जैसी स्थाई सामग्री से बनने लगे।

अहोम साम्राज्य अवासन की ओर

18वीं के उत्तरार्द्ध में अहोम साम्राज्य में आंतरिक अशांति और सत्ता के लिए संघर्ष तथा प्रशानिक शिथिलता दिखाई देती है।मोआमोरिया विद्रोह (1769–1805) जो की अहोम साम्राज्य के विरुद्ध था। इस विद्रोह के कारण अहोम साम्राज्य कमजोर हो गया।बर्मा के द्वारा (1817से 1826 के मध्य) अहोम राज्य पर लगातार आक्रमण किया और उस पर नियंत्रण स्थापित किया। इसके कारण बर्मा का सामना अंग्रेजों से हुआ और आंग्ल बर्मा के प्रथम युद्ध बर्मी शासक हार गए। 1826 ईस्वी की यंदाबू की संधि में अहोम या असम के विशिष्ट शर्तों के साथ ब्रिटिश भारत का हिस्सा बना दिया गया और अहोम साम्राज्य का सूर्यास्त अस्त हो गया (चंद्रा, 2009)।

अहोम साम्राज्य की विरासत का महत्त्व

अहोम साम्राज्य 1228 से 1826 ईस्वी तक लगभग 600 सालों तक भारत की ब्रह्मपुत्र घाटी में शासन किया।अहोम साम्राज्य के द्वारा तुर्क, अफ़ग़ान और मुग़ल आक्रमणों से न केवल असम को सुरक्षित रखा बल्कि दक्षिण पूर्वी एशिया के मध्य दीवार का कार्य किया। अहोम राज्य ने समावेशी संस्कृति का विकास किया। सहिष्णुता का परिचय देते हुए पूर्वोत्तर भारत में जनजातियों को एकीकृत करके असमिया संस्कृति और समाज का निर्माण किया।चावल और बांस सहित स्थानीय उत्पादन पद्धतियों का प्रयोग करके अर्थव्यवस्था को नवीन दिशा प्रदान की। बारूद, आग्नेय अस्त्र तथा नौसेना का विकास सहित कई नवीन आयाम भारत के अन्य साम्राज्यों से उन्हें अलग करते है।

मुगलों पर लचित बोरफुकन के नेतृत्व में अहोम राज्य की विजय और उनके रणनीतिक कौशल उन्हें मुग़लों के समक्ष खड़ा करता है। अहोम राजवंशो के बुरंजी इतिहास स्रोतों भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण स्रोत हो सकते है।इसके साथ ही,अहोम राजवंश की राजस्व प्रणाली, साहित्य व कला विकास,भारत के अन्य राजवंशो के साथ उनके संबंध एक अन्य शोध के विषय हो सकते है। अहोम राजवंश का 600 साल का काल आरंभ में आदिवासी तत्वों के साथ दिखाई देता है जो मध्य में भारतीय तत्वों के साथ हर क्षेत्र में दिखाई देता है। अहोम राज्य के उदय में वहाँ की भौगोलिक परिस्थितियो की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी।अहोम राज्य ने असम और भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक राजनीतिक, प्रशासनिक और धार्मिक क्षेत्रों में व्यापक योगदान दिया है।

संदर्भ सूची

1. चन्द्र, सतीश (2009), मध्यकालीन भारत का इतिहास' ओरिएंट ब्लैकस्वान पब्लिकेशन
2. Barpujari] HK - ¼2004½- The Comprehensive History of Assam Volume 3] Guwahati] Publication Board Assam-
3. Barua] G-C ¼1920½-Tai Language and Ahom Assamese English Dictionary] Calcutta Baptist Mission Press-
4. Baruah] S-L ¼2002½- A Comprehensive History of Assam] New Delhi] Munshiram Manoharlal Publishers-
5. Berry] J-W & Sam] D-L ¼1997½- Acculturation and Adoption- In J-W Berry] M-H Segall & C Kagitcibasi ¼Eds-½ Handbook of Cross Cultural Pyschology¼pp- 291&326½] 2 nd Edition] Vol III] Boston] Allyn and Bacon-